

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन

¹ प्रदीप कुमार तिवारी, ² डॉ० सतीश कुमार सिंह

¹ शोध छात्र, शिक्षा शास्त्र विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

² सहायक प्राध्यापक, शिक्षा शास्त्र विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

शिक्षा मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आज के समाज में अशिक्षित व्यक्ति को प्रायः उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। अतः माता-पिता अपने बच्चे को शिक्षित करना अपना परम कर्तव्य समझते हैं। शिक्षा के माध्यम से ही बालक की प्रवृत्तियों का शोधन और परिष्करण होता है जिससे उसका व्यवहार संतुलित एवं नियंत्रित होता है। व्यक्ति के आदतों के निर्माण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और बालक जैसी शिक्षा पाता है उसी के अनुरूप उसमें आदतों का निर्माण होता है। बालक को समाज के लिए उपयोगी बनाने के लिए शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु हमारे देश में शिक्षा का मुख्य स्तर प्राथमिक शिक्षा की स्थिति बहुत ही दयनीय है। प्राथमिक स्तर पर उचित शिक्षा एवं मार्गदर्शन न मिलने पर विद्यार्थियों में ज्ञान के प्रति रुचि का सन्तोषजनक विकास नहीं हो पाता जिससे विद्यार्थी योग्य होने के बावजूद ज्ञान के अभाव में वांछित उपलब्धि प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो पाता।

शोध के परिणामों से पता चलता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव पड़ता है और जो भी विद्यार्थी मानसिक रूप से स्वस्थ होता है वह अस्वस्थ बालकों की अपेक्षा शीघ्र ही सीखने में सफल हो जाता है। शोध में प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मानसिक रूप से स्वस्थ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मानसिक रूप से अस्वस्थ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से अपेक्षाकृत अधिक होती है। शहरी, ग्रामीण, शिक्षित और अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों पर इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ता है। इसलिए सभी अभिभावकों को अपने बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए जिससे वे भविष्य में अपनी सीखने की प्रक्रिया को सुगमता से चला सकें और वांछित उपलब्धियों को प्राप्त करने में सक्षम बन सकें।

मूल शब्द: मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षिक उपलब्धि, शिक्षित और अशिक्षित अभिभावक और ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र

प्रस्तावना

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ, मानसिक रोगों की अनुपस्थिति नहीं है। इसके विपरीत यह व्यक्ति के दैनिक जीवन का सक्रिय और निश्चित गुण है। यह गुण उस व्यक्ति के व्यवहार में व्यक्त होता है जिसका शरीर और मस्तिष्क एक ही दिशा में साथ-साथ कार्य करते हैं। उसके विचार, भावनाएँ और क्रियाएँ एक ही उद्देश्य की ओर सम्मिलित रूप से कार्य करती हैं। मानसिक स्वास्थ्य कार्य की ऐसी आदतों तथा व्यक्तियों और वस्तुओं के प्रति ऐसे दृष्टिकोण को व्यक्त करता है जिनसे व्यक्ति को अधिकतम सन्तोष और आनन्द प्राप्त होता है। किन्तु व्यक्ति को यह सन्तोष तथा आनन्द उस समूह या समाज से, जिसका वह सदस्य होता है, तनिक भी विरोध किये बिना प्राप्त करना पड़ता है। इस प्रकार मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन की वह प्रक्रिया है, जिसमें समझौता और सामंजस्य, विकास और निरन्तरता का समावेश रहता है।

बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव पड़ता है और जो बालक मानसिक रूप से स्वस्थ होता है वह अस्वस्थ बालकों की अपेक्षा शीघ्र ही सीखने में सफल हो जाता है। अपने परिवेश एवं परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को समायोजित करने में सक्षम हो जाता है। बालक, बृद्ध और किशोर सभी को मानसिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए, जिससे वे अपना जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत कर सकें। किन्तु बालकों का मानसिक रूप से

स्वस्थ रहना सबसे अधिक आवश्यक है। जिससे वह अपने पर्यावरण एवं परिस्थिति के साथ अधिक सामंजस्य स्थापित करने में सफल हो सके। शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव के सन्दर्भ में अनेक शोध कार्य किए गये हैं –

एस0 के0 मेनन (1973) ने अपने शोध अध्ययन में उच्च उपलब्धि वाले तथा निम्न उपलब्धि वाले उन छात्रों के व्यक्तित्व के गुणों का अध्ययन किया जो कि उच्च योग्यता के थे। यह शोध अध्ययन त्रिवेन्द्रम के दसवीं कक्षा में पढ़ने वाले 2400 विद्यार्थियों पर किया गया। इस शोध के परिणामों में पाया गया कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाला समूह जिसमें श्रेष्ठ एवं सामान्य योग्यता के लड़के और लड़कियाँ थीं, बुद्धि लब्धि के अनुरूप कम शैक्षिक योग्यता वाले लड़के एवं लड़कियों की तुलना में कम बहिर्मुखी तथा कम कुसमायोजित हैं।

अनिल यादव (2010) ने “माध्यमिक स्तर पर दृष्टि एवं श्रवण रूप से अक्षम विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा, आकांक्षा स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन” विषय पर शोध कर निष्कर्ष निकाला कि दृष्टि बाधित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा श्रवण बाधित छात्रों से अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। दृष्टि बाधित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा श्रवण बाधित छात्रों से अपेक्षाकृत अधिक पाई गई।

विशेष कुमार सिंह (2006) ने “विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं

नैतिक मूल्यों का अध्ययन” शीर्षक पर शोधकार्य किया। शोध के निष्कर्ष में इन्होंने पाया कि नैतिक मूल्यों के विकास में शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव नहीं पड़ता है। इससे स्पष्ट है कि मूल्यों के विकास के लिए उत्तरदायी अन्य अनेक कारण हैं जो समग्ररूप से प्रभाव डालते हैं।

श्रीमती ऊषा रातौर (2008) ने विविध प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों में शैक्षिक दबाव, मानसिक स्वास्थ्य, कार्य सन्तुष्टि एवं नेतृत्व क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया। राजकीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय व निजी विद्यालय के शिक्षकों में मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से थोड़ा अन्तर पाया गया। इसका कारण निजी विद्यालयों के शिक्षकों के लिए अन्य विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में कम सुविधाएं मिलना हो सकता है। सभी विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों में मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से कमोबेश मात्रा में अन्तर पाया गया। उपर्युक्त सभी अध्ययन विद्यार्थियों और बालकों पर शैक्षिक उपलब्धि और मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में किये गये हैं और इनसे यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव अवश्य पड़ता है।

अतः शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी इण्टर कालेजों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से किस प्रकार का सम्बन्ध है और कौन-कौन से कारक हैं जो कि मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन को निम्नलिखित शीर्षक प्रदान किया गया है –

“विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन”

उद्देश्य

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन करना।

4. शिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक दबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ: उद्देश्यों के आधार पर निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया –

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव नहीं पड़ता।
2. ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव नहीं पड़ता।
3. शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव नहीं पड़ता।
4. शिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव नहीं पड़ता।
5. अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव नहीं पड़ता।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

इस अध्ययन में न्यादर्श चयन हेतु यादृच्छिक तकनीकी का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए सुल्तानपुर जनपद के शहरी क्षेत्र के 90 और ग्रामीण क्षेत्र के 50 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें शिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की संख्या 91 तथा अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की संख्या 49 हैं।

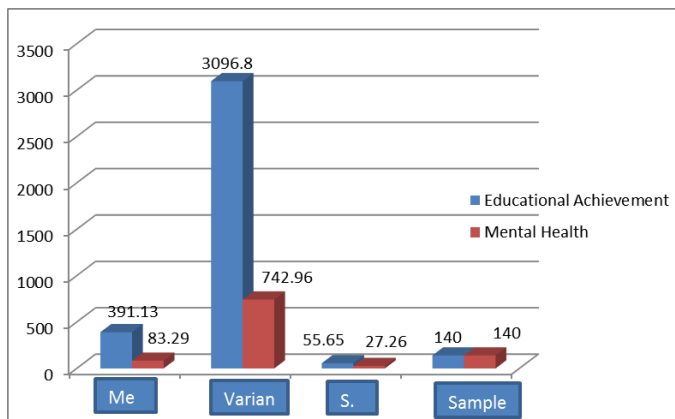
उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के संग्रह के लिए डॉ0 अरुण कुमार सिंह एवं डॉ0 अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित “मानसिक स्वास्थ्य बैटरी” (Mental Health Battery – MHB) का प्रयोग किया गया है। विद्यार्थियों के 10वीं के प्राप्तांक को उनके शैक्षिक उपलब्धि के रूप में प्रयोग किया गया है।

सारणी 1: विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उनके मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R)	सार्थकता स्तर (.05 स्तर)
शैक्षिक उपलब्धि	140	391.13	55.65	58.78	अस्वीकार
मानसिक स्वास्थ्य	140	83.29	27.26		

df = 278



आकृति 1: विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उनके मानसिक स्वास्थ्य का आरेखीय निरूपण।

उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अंक 391.13 और मानक विचलन 55.65 है। मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान अंक 83.29 एवं मानक विचलन 27.26 है। गणना से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 58.78 है जो कि $df = 278$ के सार्थकता स्तर 0.05 पर 1.96 से अधिक है। जिससे बनाई गई शून्य

परिकल्पना "विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव नहीं पड़ता" अस्वीकृत हो जाती है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उनके मानसिक स्वास्थ्य से प्रभावित होती है।

सारणी 2: ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उनके मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R)	सार्थकता स्तर (.05 स्तर)
शैक्षिक उपलब्धि	50	376.94	55.85	33.85	अस्वीकार
मानसिक स्वास्थ्य	50	74.92	27.35		

$df=98$

यहाँ आँकड़ों के गणना के आधार पर टी-अनुपात (C.R.) का मान 33.85 प्राप्त हुआ है और टी-तालिका के अनुसार $df=98$ पर टी का आवश्यक मान 1.98 है अतः टी के आवश्यक मान से गणना द्वारा प्राप्त मान अधिक है। इसलिए .05 सार्थकता स्तर पर शून्य

परिकल्पना "ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव नहीं पड़ता।" अस्वीकृत हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव पड़ता है।

सारणी 03: शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उनके मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R)	सार्थकता स्तर (.05 स्तर)
शैक्षिक उपलब्धि	90	399.01	53.68	49.40	अस्वीकार
मानसिक स्वास्थ्य	90	87.94	26.21		

$df=178$

टी-तालिका के अनुसार $df=178$ पर टी का आवश्यक मान 1.97 है और गणना के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 399.01 और मानक विचलन 53.68 तथा मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान 87.94 एवं मानक विचलन 26.21 प्राप्त हुआ है। और क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का मान 49.40 प्राप्त हुआ है इसलिए .05 सार्थकता स्तर

पर शून्य परिकल्पना "शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव नहीं पड़ता।" अस्वीकृत हो जाती है तथा यह स्पष्ट हो जाता है कि शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उनके मानसिक स्वास्थ्य से प्रभावित होती है।

सारणी 04: शिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R)	सार्थकता स्तर (.05 स्तर)
शैक्षिक उपलब्धि	91	398.08	54.42	49.89	अस्वीकार
मानसिक स्वास्थ्य	91	80.25	27.05		

$df=180$

प्राप्त आँकड़ों के गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 49.89 प्राप्त हुआ है और टी-तालिका के अनुसार $df=180$ पर टी का आवश्यक मान 1.97 है। यहाँ टी के आवश्यक मान से गणना द्वारा प्राप्त मान अधिक है। इसलिए .05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना "शिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि

पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव नहीं पड़ता।" को अस्वीकार करते हुए हम यह कह सकते हैं कि शिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव पड़ता है।

सारणी 05: "अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव नहीं पड़ता।"

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R)	सार्थकता स्तर (.05 स्तर)
शैक्षिक उपलब्धि	49	378.22	56.16	32.49	अस्वीकार
मानसिक स्वास्थ्य	49	88.94	27.01		

$df=96$

गणना के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 378.22 और मानक विचलन 56.16 प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान 88.94 तथा मानक विचलन 27.01 प्राप्त हुआ है। इसमें C.R. का मान 32.49 प्राप्त हुआ है और टी-तालिका के अनुसार $df=96$ पर टी का आवश्यक मान 1.98 है। यहाँ टी के आवश्यक मान से गणना द्वारा प्राप्त मान बहुत अधिक

है। इसलिए .05 सार्थकता स्तर पर बनाई गई शून्य परिकल्पना "अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव नहीं पड़ता।" अस्वीकृत हो जाती है और यह स्पष्ट हो जाता है कि अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उनके मानसिक स्वास्थ्य से प्रभावित होती है।

निष्कर्ष

ऑकड़ों का अध्ययन करने के पश्चात् यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उनके मानसिक स्वास्थ्य से प्रभावित होती है चाहे वे विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र के हों अथवा शहरी क्षेत्र के हों। यह भी स्पष्ट हुआ है कि अभिभावक शिक्षित हो अथवा अशिक्षित उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि प्रत्येक स्थिति में मानसिक स्वास्थ्य से प्रभावित होती ही है। जिन विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य उत्तम होता है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी मानसिक रूप से कम स्वस्थ बच्चों की अपेक्षा अधिक होती है और मानसिक रूप से स्वस्थ विद्यार्थियों के लिए किसी विषयवस्तु अथवा कार्य को सीखना अपेक्षाकृत अधिक आसान होता है। इसलिए अभिभावकों को अपने बच्चों के लिए उचित खान-पान, सौहार्दपूर्ण और शान्तिपूर्ण वातावरण उपलब्ध कराने का विशेष ध्यान रखना चाहिए जिससे जीवन में वे वांछित उपलब्धियों को आसानी से प्राप्त कर सकें।

सुझाव

उपर्युक्त ऑकड़ों का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं –

- स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निर्माण होता है इसलिए अभिभावकों को बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- प्रत्येक विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। इसलिए विद्यार्थियों का मानसिक रूप से स्वस्थ होना शिक्षा की प्रक्रिया के लिए आवश्यक है।
- शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जिन विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं है उन्हें सीखने में अपेक्षाकृत अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इसलिए अध्यापकों को चाहिए कि ऐसे विद्यार्थियों का विशेष ध्यान दें और उन्हें विभिन्न प्रकार की तकनीकियों से सीखने में सहायता प्रदान करें।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल सुल्तानपुर जनपद मे यू0 पी0 बोर्ड से संचालित इण्टर कालेजों के 10 वीं के विद्यार्थियों पर आधारित है। भविष्य में व्यापक क्षेत्रों में इसका अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध में केवल शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित और अशिक्षित अभिभावकों को ही लिया गया है। इसमें आय, जाति एवं अन्य आधारों को सम्मिलित कर शोध कार्य किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कुपूसवामी, बी. (1976). बाल व्यवहार और विकास, नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि।
2. गुप्ता, एस. पी. (2008). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स।
3. गुप्ता, ए. (1982). स्ट्रेस एमंग वर्किंग, इट्स इफेक्ट्स ऑन मैरिटल एडजस्टमेंट, पेपर प्रेजेन्टेड एट दि यू0 जी0 सी0 सेमिनार ऑन स्ट्रेस इन कान्टेम्पेरी लाइफ, नई दिल्ली : स्ट्रेटजी ऑफ कोपिंग।
4. गुप्ता, एस. पी. सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक मन्दिर।
5. भार्गव, डॉ महेश (2009). मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगरा : राखी प्रकाशन, एच. पी. भार्गव बुक हाउस।

6. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जूलाई-दिसम्बर 2006.
7. मेनन, एस0 के0 (1973). "उच्च क्षमता वाले शैक्षणिक सफलताओं की व्यक्तित्व प्रोफाइल का एक तुलनात्मक अध्ययन" शैक्षिक अनुसंधान का पाँचवाँ सर्वेक्षण, वाल्यूम-एक नई दिल्ली, एनसीईआरटी।
8. यादव, अनिल (2010). एम.फिल डेजर्टेशन, आईएएसई विश्वविद्यालय, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर।
9. राय, पारसनाथ (1993). अनुसन्धान परिचय, आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिशर्स।
10. सरीन, शशिकला एवं सरीन, अंजनी (2014). शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
11. सिंघल, अनुपमा और कुलश्रेष्ठ, एस0 पी0 (2014). शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
12. सिंह, सतीश कुमार (2017). बाल्यावस्था एवं उसका विकास, नई दिल्ली : ए0 पी0 एच0 पब्लिकेशन्स।